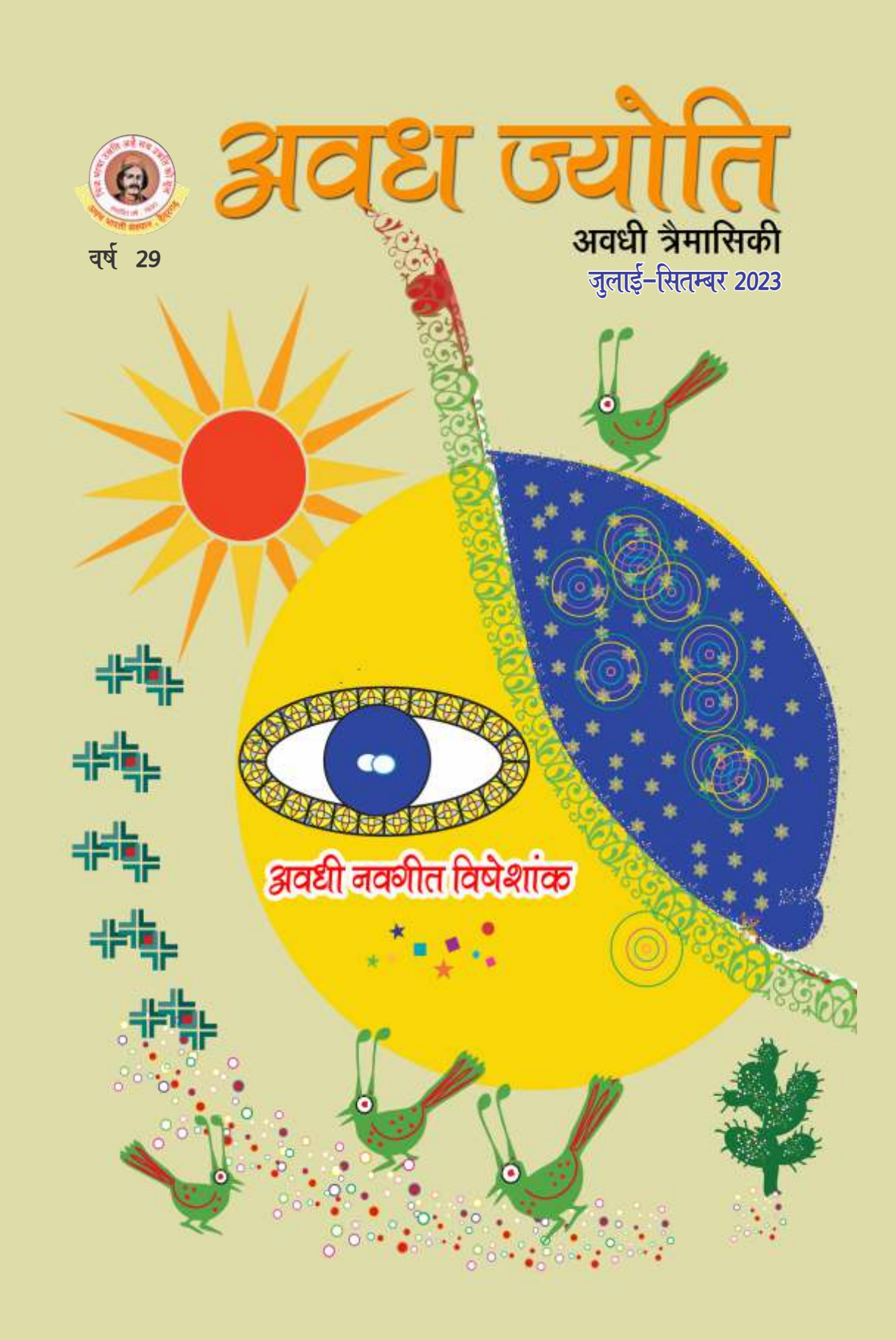

अवध ज्योति

वर्ष 29

अवधी त्रैमासिकी

जुलाई–सितम्बर 2023

अवध-ज्योति

वर्ष : 29

जुलाई-सितम्बर - 2023

संरक्षक :

डॉ. सत्या सिंह

सम्पादक:

डॉ. रामबहादुर मिश्र

उप सम्पादक :

रमाकांत तिवारी 'रामिल'

सह सम्पादक :

विष्णु कुमार शर्मा 'कुमार'

प्रबन्ध सम्पादक :

प्रदीप सारंग

पीयर रिव्यू पैनल:

प्रो. सूर्य प्रसाद दीक्षित, लखनऊ
रामदेव धुरंधर, मारिशस
श्री विक्रममणि त्रिपाठी, नेपाल
डॉ.राकेश पाण्डेय, दिल्ली
सुधेन्दु ओझा, दिल्ली

अवध भारती संस्थान

नरौली, हैदरगढ़, बाराबंकी-225124
'अवधी भवन' अवध भारती संस्थान
अर्जुनगंज, लखनऊ-226002
वेब - www.awadhawadhi.com
e-mail: awadhjyoti@gmail.com
salmanansari7@gmail.com
Mob. : 9450063632

मुद्रक : सैप प्रिन्टर्स

बी.एच.ई.एल. रोड नं. 1
यूपीएसआईडीसी, जगदीशपुर
अमेठी मो. 9565723540

विषय क्रम

रामजोहारि - सम्पादकीय 2

चिट्ठी-पत्री - 5

चीन्ह-पहिचान - कृतियों का परिचय 7

हाल-चाल - अवधी समाचार 8

विशेष कवि :

1. अनुज नागेन्द्र - प्रतापगढ़ 10
2. मनोज मिश्र 'कप्तान' - श्रावस्ती 22
3. चन्द्र प्रकाश पाण्डेय - रायबरेली 37
4. राजमूर्ति सिंह 'सौरभ' प्रतापगढ़ 49
5. संजय अवधी - गोण्डा 62
6. विनय विक्रम सिंह - नोएडा 67
7. अजय प्रधान - बाराबंकी 76
8. ओम निश्चल - दिल्ली 92
9. अरुण तिवारी - अम्बेडकर नगर 106
10. ज्ञानप्रकाश शुक्ल 'आकुल' - खीरी 116
11. डॉ. प्रदीप कुमार शुक्ल - लखनऊ 121

प्रतिनिधि अवधी नवगीत - 130-156

रामकृष्ण 'संतोष', सच्चिदानंद तिवारी 'शलभ', भारतेन्दु मिश्र, आद्या प्रसाद मिश्र 'उन्मत्त', पारस भ्रमर, डॉ. रामबहादुर मिश्र, असविन्द द्विवेदी, जुमई खां 'आजाद', लवकुश दीक्षित, शिवलोचन तिवारी, गीता श्रीवास्तव, आनन्द प्रकाश अवस्थी, डॉ. श्रीपाल सिंह 'क्षेम', दूधनाथ शर्मा, हरिश्चन्द्र पाण्डेय 'सरल', द्वारिका प्रसाद तिवारी, राम अकबाल त्रिपाठी 'अंजान', डॉ. विद्या विन्दु सिंह, डॉ. राधा पाण्डेय, डॉ. अशोक 'अज्ञानी', हरिमोहन बाजपेयी 'माधव', बंशीधर शुक्ल, चन्द्रभूषण त्रिवेदी 'रमई काका', जगदीश 'पीयूष', सुशील सिद्धार्थ, डॉ0 वीरेश प्रताप सिंह, दिनेश सिंह, आदित्य वर्मा, बलभद्र प्रसाद दीक्षित 'पढ़ीस'।

एक प्रति मूल्य : 50/-, वार्षिक - 200/-

आजीवन सदस्यता : 1. **विशेष सम्मानित :** 5000/-

2. संरक्षक सदस्यता : 11000/-

सम्पादकीय

राम जोहारि

हिन्दी के समुहे अवधी कदमताल मिलावत चलत है। अवधी मा गीत, अगीत, नवगीत, मुक्तक, नई कविता, गजल, हाइकु, क्षणिका, जइसन काव्य विधा मा तमामन अवधी कविता लिखी जाति हैं, जिहसे अवधी कविता की भाषा-शैली औ वहिके भावजगत का नवा ताना - बाना मिला। ई कविता मा सजाव अउ बनाव पर जोर न दइके समाज अउ समय कइ हकीकत देखाय परत है। आज के समय मा भ्रष्ट राजनीति, बेकारी, खेतिहर कै गरानी, धरम अउ पूजा-पाठ कइ पाखंड, मनई-मनई मा दुराव, छल, कपट, इरखा, परसंताप, धोखाधड़ी, घूसखोरी, हराम खोरी, जादा से जादा धन यकट्ठा करै कइ होड़, गरीब-खेतिहर-मंजूर, कइ दुरदसा, नई पीढ़ी कइ हतासा अउ निरासा के जरिए उपजा अवसाद, नसाखोरी अउ टिकियाचोरी जइसन बुराई भये से समाज मा घुन लागि गा। जातिवाद, पंथवाद, धर्मवाद, क्षेत्रवाद, अउ भाषावाद के चलत भए समाज से समरसता नदारद होइगैं, आपस मा बैमनस बाढ़त जात है। भोगवाद, भौतिकवाद, बाजारवाद, आतंकवाद, पूंजीवाद कइ बोलबाला दिन-दिन बाढ़त जात है। मनई मनई कइ दुसमन बनि गवा है, समाज मा स्वारथी बयार ई मेर बहि रही कि परमारथ कइ भीति ढहिगै। ई सबका अपनी कविता मा अवधी कवि बड़ी बारीकी अउ संजीदगी से लिखत अहैं।

अवधी मा तमामन काव्य विधा के साथेन तमाम कवि नवगीत लिखि रहे हैं। हिन्दी मा नवगीत कइ सुरूआत 1960 के दौरान भै। इहका नई कविता कइ अंग माना गवा। नई कविता की मेर वहिमा मनई कइ सुख-दुख बहुतै बेबाकी से लिखा गवा। पुरान गीतन की जगह नवा भावबोध उजागिर भवा। गीत, नवगीत कइ परम्परा लोकगीतन से जुड़ी हैं यहीलिए इनके उप्पर वहिकै छाप जाहिर रहत हैं, हाँ वहिकै शिल्प विधान अउ अभिव्यंजना बिलकुल नवा-नवा है। अवधी मा तमाम कवि नवगति लिखिन अउ लिखत अहैं जेहिमा सुशील सिद्धार्थ, जगदीश 'पीयूष', भारतेन्दु मिश्र, हरिश्चन्द्र पाण्डेय सरल, सच्चिदानंद तिवारी शलभ', रामकृष्ण 'संतोष', लक्ष्मी प्रसाद 'प्रकाश', आद्या प्रसाद मिश्र 'उन्मत्त', निर्मल बैसवार, बृजेन्द्र मिश्र, अवनीन्द्र विनोद, जगदीश सिंह 'नीरद' योगेन्द्र प्रताप सिंह, डॉ. रामबहादुर मिश्र अवधेन्दु, असविन्द द्विवेदी, बेकल उत्साही, लवकुश दीक्षित, दूधनाथ शर्मा 'श्रीश' पारस भ्रमर, डॉ. श्रीपाल सिंह 'क्षेम' के साथेन पढ़ीस, वंशीधर अउ रमई काका अवधी नवगीत कइ परम्परा डारिन। कुछ नवगीतन कइ बानगी पेस है -

नकली समाजवाद खोखली आजादी,
पपवा प परदा महतिमा कै खादी।
जेकरे रकतवा से बेदिया गै लीपी,
ओकरे असनवा प बैठि गे फसादी,
मारि के ढकेलि द्या न सोझे उतरै भइया।।

(आद्याप्रसाद मिश्र 'उन्मत')

गढ़वायौ नही काहे लायेउ नहीं
सूकु नकछत्र कइ चककुई बिंदिया
ओ पिया! ओ पिया! ओ पिया! ओ पिया!
याद है वह जोन्हैया कि भूलेउ सजन
नेह मा बूड़ि के जौन दीन्हेउ बचन
चाहे जौने बखत तुम कहौ तौ नखत,
तूरि के देब अंगिया वही से सिया।

(सच्चिदानंद तिवारी 'शलभ')

नदी पियासी खेत भुखाने
बिरवा सुलगैं तर ते
डग्ग डग्ग पर भारत
माफी मांगि रहा डालर ते
दिन पर दिन गरमाय रहा है
लासन क्यार बजार
जमाना जालिम है

(सुशील सिद्धार्थ)

गांव की गल्ली दिल्ली तेने
अधिरस्ता बतलाय,
रहा है देस कहां का जाय।
हर चुनाव मा ई पलकन तर
कौनउ सपना जागइ,
उइ सपना का लूटि फूंकि के
कौनौ डकहा भागै।
थैली टोपी हाथ मिलावैं, तइके हंसै ठठाय।

(डॉ. रामबहादुर मिश्र)

मन कइ अकथ किहानी।
बनि बनि बिगरत बनति बिगरि पुनि
छिनु छिनु नई पुरानी।
का का सोचा रहइ करइ का
का का सपना देखेन,
मीच कहौं कहुं जीवन अभिलाखै
चन्द खेलौना मांगत कबहूं

कबहूं अंखियन पानी।

(रामकृष्ण संतोष)

उबहनि छोटि गगरिया दरकी,
झुंड कै झुंड चिरइया परकी
घरथरी परकी।
जुगुरा के द्वारे सतसंग ठना है,
एक बड़ा स्वादू भगवान बना है,
बनै पकवान चढ़ावा चढ़ै दिन भर
फांका करै मोलहा न कनकी कना है
फरइ बेइमान ईमान कै कुरकी।

(बृजेन्द्र मिश्र)

अवधी नवगीतन कइ ई बिरासत बहुतै मजबूत अहै। यही कड़ी मा ई साइत अनुज नागेन्द्र, राजमूर्ति सिंह 'सौरभ', अवनीश त्रिपाठी, ज्ञान प्रकाश 'आकुल', अजय प्रधान, विनय विक्रम सिंह, चन्द्र प्रकाश पाण्डेय, डॉ. प्रदीप शुक्ल, संजय अवधी, अरुण कुमार तिवारी, मनोज मिश्र 'कप्तान' जइसन नामी गेरामी कवि अवधी मा नवगीत लिखि के अवधी नवगीत कइ अकूत समपदा सिरजत अहैं। ई सबै अवधी कवियन का विस्तार से छापे के बाद ई कड़ी आगे चलत रहे। यही के साथे आगे अवधी गजल, अवधी गीत, अवधी हाइकु, अवधी कविता, जइसन साहित्य पत्रिका मा छापा जाये। आप सबसे यहै अरदास अहै कि यही मेर आपन नेह नात बनाये राखेउ।

सब पंचन का राम जोहारि

राम बहादुर मिसिर

चिट्ठी-पत्री

☐आदरणीय संपादक महोदय अवध ज्योति अवधी त्रैमासकी पत्रिका द्वारा अवध भारती संस्थान हैदरगढ़ बाराबंकी का सादर प्रणाम !

अवध भारती संस्थान द्वारा करीबन 29 बरिस से निरंतर परकासित पत्रिका से जुरै का अवसर हमै 2021 मा आदरणीय गुरुदेव डॉ. श्री रामबहादुर मिसिर जी के जरिया से मिला!

तब हमै नवा पुरान मिलाय कै कइउ महत्वपूर्ण अउ उपयोगी अंक गुरुदेव जी के आशीर्वाद के रूप मा मिला जेहकै हम जीवन भर गुरुदेव श्री कै आभारी हन !

मुल अवध ज्योति पत्रिका से बिलंभ से जुरै केरि खटक हरदम बना रही!

अंक पढय के बादि मा इ महसूस भा कि अवध ज्योति पत्रिका अव अवध भारती संस्थान आज लोकभासा साहित्यक बिकास नवा कलमकारन खातिर अउ विलुप्त होत लोक सबद माला के खातिर केतिक महत्वपूर्ण है!

आदरणीय मिसिर जी कै करीबन 40 बरिस कै तपिस्सा उनके साहित्य साधना से उपजा अवधी संगक्षण कै बिरवा आज भारत के बाद करीबन दस देसन मा अवध ज्योति पत्रिका के रूप मा आप मिठास घोरि रहा है !

संस्थान से आवै वाले हर यक अंक का बहुत उत्सुक होइकै अगोरित है अउ आसा करित है अवध ज्योति के सब पढइयन कै यहै हाल होई!

अबहीं मौजूदा अंक से पहिले वाला अंक अवधी कहानी बिशेषांक अवधी खिस्सा कहानी वाला रहा आसा करित है आप सब पढइयन का बहुत नीक लाग होई !

जेहिमा यक से बढिकै यक अवधी खिस्सा पढै का मिला श्री रामबहादुर मिसिर जी कै धरम, अरुण तिवारी जी कै फूला काकी, मनोज भइया कै चतुराई, प्रदीप तिवारी धवल दादा कै गोहार, प्रदीप सारंग दादा कै सुघरी शोभा वाजपेयी जी कै लघुकथा, सहित तमाम खिस्सा कहानी कै संगम लइकै निकरा अंक बहुत महत्वपूर्ण रहा!

अपने यहि चिट्ठी के जरिया हम संपादक महोदय अउ अंक के सब साहित्य मनीषीयन कै आत्मिक आभार सहित हार्दिक बधाई पठइत है!

संजय श्रीवास्तव अवधी, मनकापुर गोंडा उत्तर प्रदेश , मो.8437132897

☐आदरनीय सम्पादक महोदय,

सादर राम जोहार।

अवध ज्योति त्रैमासिकी कै जुलाई - सितम्बर -2022 का अवधी किहानी विशेषांक मिलि गवा है । मुख पृष्ठ कै साज - सज्जा बहुतै मनमोहक है। किताब खोलतै खन सम्पादकीय लेख मा रामबहादुर मिसिर दादा की कलम से अवधी कहानी का स्वरूप, परम्परा अउर नये पुराने अवधी कहानी कारन का जानै समझै का पूरा-पूरा मउका मिलत है पाठकन का ।

अन्दर के पन्नन मा करीब 21 कहानिन का एकु सुन्दर गुलदस्ता द्याखै का मिला, जेहिमा पुराने, स्थापित अउर नये कवियन की कहानिन से परिचय हुअत है । पहिली कहानी से लइकै आखिरी कहानी तक पत्रिका बिलकुल सांस लियै का मउका नहीं दियत है ।

पुराने कवियन मा अवधी कै पहिली किहानी मोहिनी चमारिन कै - छोटके चोर के साथे पं0 वंशीधर शुकुल जी कै - काजी का नौकर संकलित हैं, स्थापित कहानीकारन मा राम बहादुर मिश्रा जी, अरुण तिवारी जी, इंद्र रमाकान्त तिवारी रामिल जी, प्रदीप तिवारी धवल जी, सर्वेश अस्थाना जी, आचार्य सूर्य प्रसाद शर्मा निशिहर जी अउर नये नामन मा प्रदीप सारंग जी, रजत बहादुर वर्मा जी, प्रदीप महाजन जी जइसे नाम शामिल हैं ।

ई कहानिन का पढ़त बखत अइसा लागत है जइसे हम अपने गांव - गिरांव, खेत-खरिहानन मा घूमि रहे हन । गांव का पुरातन औ नवीनतम दूनौ सरूपन के दर्शन ई कहानिन मा हुअत हैं।

यहिके साथे पड़ोसी देश नेपाल के पाहुन कथाकार भगवान दास यादव जी कै लम्बी कहानी - नादानियां तौ अद्भुत है। एक नवा काम अनुवाद वाला भी ई अंक मा है मुन्नू लाल जी कै कहानी - धूल मा फूल ।

औ आखिर मा प्रदीप तिवारी धवल भइया कै अवधी कृतियन कै समीक्षा मानौ गागर मा सागर है ।

अवधी बयार - चन्द्रभानु मिश्रा, महकै महुआ सारी रतिया - दिनेश त्रिपाठी शम्श, फगुनवा में रंग बरसे - राम बहादुर मिश्र, पं0 वंशीधर शुक्ल - व्यक्ति, रचनाकार - डॉ0 सीमा पाण्डेय, अन्तर्जाल मा नौनिहाल - प्रदीप तिवारी धवल के साथे हमरे कहानी संग्रह - ठकुराइन के समोसा कै बहुत सुन्दर समीक्षा ई किताबन का पढै कै जिज्ञासा मन मा पइदा करत है।

औ आखिर मा हम सम्पादक दादा राम बहादुर मिश्रा औ प्रबन्ध सम्पादक भाई प्रदीप सारंग जी का एतना नीक अवधी कहानी विशेषांक बरे हिरदै से धन्यवाद देइत है ।
अवध भारती पत्रिका के सबै पढ़इन का हमार एक बार फिर राम जोहार ।

अजय 'प्रधान', 1114 - लक्ष्मण पुरी कालोनी, बाराबंकी, मोबाइल- 9648464647

☐ समपादक मिसिर जी का रामजोहारि

अवध ज्योति त्रैमासिक पत्रिका केर जुलाई सितम्बर 2022 अंक पढ़य का मिला जू हरेर होय गवा।

अवधी कहानी केर यू अंक मानव अवधी केर धरोहर थाथी होय। इमा छपी कहानी जहाँ एक लंग मनोरंजन करावत है तौ दुसरी तरफ ज्ञान केर भंडार भी खोलत है। कहानी और लघु कथा के साथेन पुस्तक समीक्षा मनका मोहि लिहिस। वैसय अवधी समाज मा किस्सा कहानी केर बहुत पुरान इतिहास है। लकिन ई इंटरनेट के जमाने मा सब धीरे धीरे लुकात जात हय। इका बचावय मा अवधी पत्रिका अवध ज्योति मील कय पत्थर साबित होय रही हय। पूरे समपादक मंडल का धनियाबाद रामजोहारि।

मिथिलेश कुमार जायसवाल, साहित्यकार, पत्रकार, बहराइच

चीन्ह पहिचान :

(अवधी कृतियों का परिचय)

फगुनवा में रंग बरसे (अवधी फाग)

समीक्षक : राम दुलारे सिंह 'सुजान'

परमादरणीय डॉ. रामबहादुर मिश्र जी द्वारा यह पुस्तक मुझे दिनांक 30.7.2030 को सप्रेम भेंट की गयी, आपके प्रति मैं आभार प्रकट करते हुए इस पर अपने विचार देरे का प्रयास मात्र कर रहा हूँ। षट ऋतुओं वाले देश भारत में बसंत ऋतु का विशेष महत्व है। यह ऐसा समय होता है जब प्रकृति अपने को नये परिधान से सजाती है और नयी उमंग के साथ पृथ्वी पर उभरती है। इसका प्रभाव यह पड़ता है कि जड़ चेतन भी अछूते नहीं रहते और वे भी प्रकृति के साथ आनंद में सराबोर हो जाते हैं आखिर हों भी क्यों ना वे भी तो प्रकृति के ही एक तत्व हैं। जहां पेड़ों में नयी कोपलें, और फूल आते हैं वहीं कोयल जैसी पक्षी की बोल भी गूंजने लगती है, सारा वातावरण सुरभित और आनन्दित हो जाता है। उसी समय मानव मन में फाग रूपी संस्कार का जन्म होता है और एक विशेष विधा का गीत फाग मचल उठता है जिसके कई रूप हैं परन्तु वह हर रूपों में मोहक और आनन्द देने वाला है।

डॉ. रामबहादुर मिश्र जी का यह अवधी फाग संकलन अद्‌भुत है। इसमें फाग भी हैं जो कई तरह से गाये जाते हैं, धमारि भी हैं जो राह चलते हुए गायी जाती है। होरी भी है, जोगीरा भी है, और अन्य सहयोगी गीतों की श्रृंखला है। जिन रचनाकारों ने फाग की रचना की उनके नाम इस पुस्तक में सादर लिखे गये हैं।

फाग का गायन वैज्ञानिक दृष्टिकोण से भी बहुत लाभदायक है। अगर ढेढ़ताल पूर्ण लय और धमारि के साथ गाया जाय तो पूरा एक घंटा समय लेता है। फाग में स्वांस नली की अद्‌भुत कसरत हो जाती है अतः फाग गायक साँस का मरीज नहीं होता। एक घण्टे फाग गाने से यदि अपच की समस्या है तो वह भी दूर हो जाती है। धीरे-धीरे फाग की लय का चढ़ना उतरना अद्‌भुत आनन्द देता है। यह इसलिए भी लिख रहा हूं क्योंकि मैंने फाग गायन का पूरा आनन्द उठाया है।

फागुन में फाग और होरी गीतों का क्या महत्व है उसका प्रकृति से क्या तादात्म्य है भारतीय संस्कृति में किस प्रकार से उत्सवों पर गीतों का सृजन किया गया है, फागुन की हवायें हमारे मनोभावों को किस प्रकार श्रृंगारिक बनाती है और किस मनोवृत्ति में फाग का गायन किया जाता है सब कुछ इस पुस्तक में उपलब्ध है।

आदरणीय डॉ. मिश्र जी ने इस पुस्तक में फाग गीतों को प्रकाशित कर लोकसाहित्य कोपुनर्जीवित करने का जो प्रयास किया है वह पूर्णतः स्वागत योग्य है। इसकी जितनी भी प्रशंसा की जाय कम है। आप अवधी ही नहीं हिन्दी साहित्य के सजग प्रहरी है आपकी दृष्टि जहां तक जाती है वहां तक सामान्य व्यक्ति का ध्यान पहुंचना असम्भव है।